Badal Saraswat
@badal_saraswat • Jan 23, 2021 • 32 tweets

Share Twitter Download

ध्यान से देखिए इन्हें, ये वे गरीब #ब्राह्मण हैं,जिन पर #अम्बेडकरवादी,#वामपंथी😠 लोग #दलितों_के_शोषण का #आरोप लगाकर #समाज_में_जातीय_विद्वेष का #जहर घोलते हैं।😠😠😠
☝ जबकि सत्य यह है कि #ब्रिटिश_शासन के दौरान #ईसाईयों व उनके #चमचों ने #सन1769 से #सन1900 के बीच

पूरा पढ़िये👇👇👇

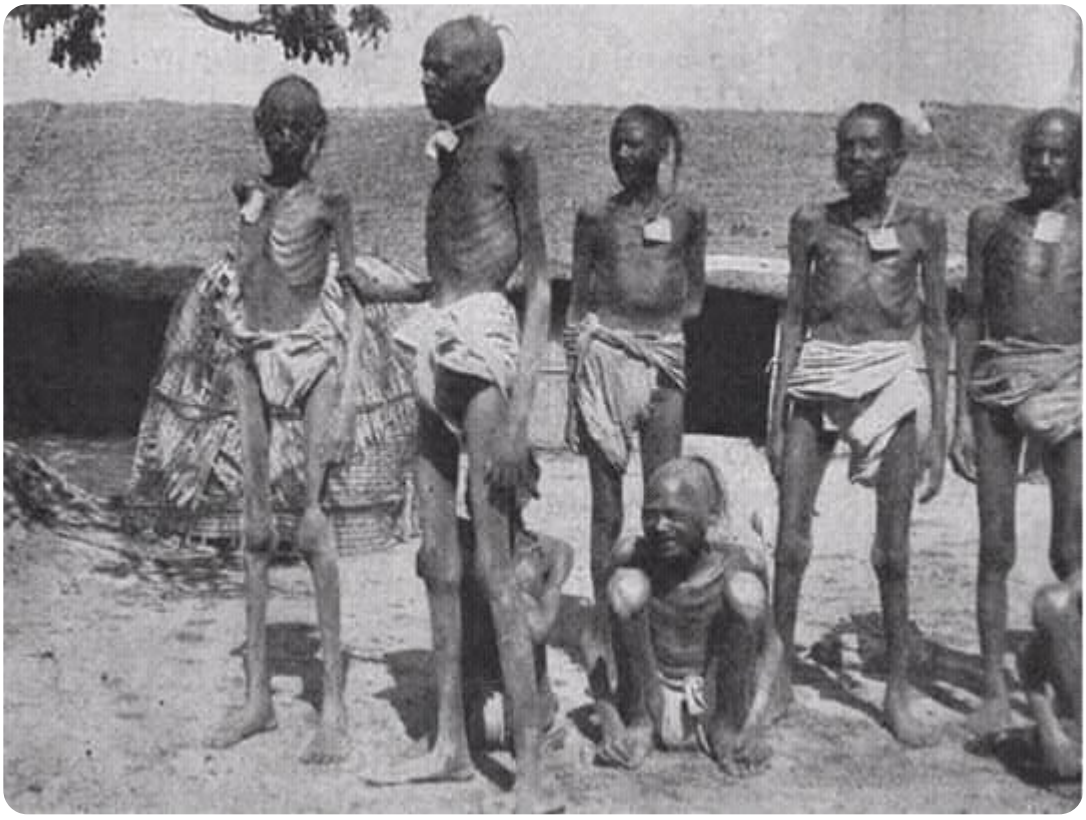

☝ भारत की लगभग 10% आबादी(2 करोड़ 66 लाख लोगों)को #शोषण,#अत्याचार,#छूआछूत और #भूख से तड़पा-2 कर मारा था और जो बच गए उनको #ब्राह्मणों, #क्षत्रियों,#वैश्यों और #शूद्रों को #जातियों में बांटकर, #दरिद्र और #दलित बना दिया।

☝ कुल मिलाकर #भाई को ही #भाई का #शत्रु बना दिया गया था।

☝ आज का #मूलनिवासी_आंदोलन भी उसी #षडयंत्र की एक #कड़ी है

☝ "ब्राह्मणों को #कोसने और #गालियां देने से पहले
☝ ऐसे पचासों प्रश्नों के सही #उत्तर तो तुम्हें देने ही पड़ेंगे... ☝ जो अब मैं तुम लोगों से करने वाला हूँ....
☝ वरना बंद करो यह #अनर्गल_प्रलाप और ब्राह्मणों को #कोसना...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-उठ जाओ,तो तुम उठ गए...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-बैठ जाओ,तो तुम बैठ गए...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-सो जाओ,तो तुम सो गए...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-जाग जाओ,तो तुम जग गए...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम यह पढ़ लो,तो तुमने वह पढ़ लिया...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम मत पढ़ो,तो तुमने

पढ़ना छोड़ दिया...
☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम कपड़े मत पहनो,तो तुम नंगे हो गए...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम कूएं का पानी मत पीयो-तुमने पानी पीना छोड़ दिया...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम मांस खाओ - तुमने मांस खा लिया...😠

☝ ब्राह्मणों ने कहा-तुम शराब पी लो,तो तुमने शराब पी ली...😠

☝ ब्राह्मणों ने कहा-मंदिर मत जाना,तुमने मंदिर जाना छोड़ दिया...

☝ ब्राह्मणों ने कहा-अपने कानों में पिघला हुआ सीसा डलवाओ,तुमने चुपचाप अपने कान आगे कर दिए...

☝ एक हज़ार साल तक जो ब्राह्मण ने तुम्हें कहा,तुम चुपचाप मानते चले गए...

#इतनी_आज्ञाकारिता....😠😠😠

इतना आज्ञाकारी तो कोई

भगवान का भक्त भी नहीं हुआ है*...

तुम में इतनी #ब्राह्मण_भक्ति #क्यों❓ #कहाँ❓ से और #कैसे❓ आ गई❓❓❓

#क्यों,#क्यों और #क्यों???
✊ किसी ने कुछ भी कहा और तुमने मान लिया और चल दिये #ब्राह्मणों का विरोध करने😠😠😠

✊ क्या तुम्हारे पास अपना कोई दिमाग नहीं था?

✊ क्या तुम्हारे पास कोई #आत्मसम्मान नहीं था?

✊ क्या तुम्हारे शरीर में #एक_कतरा_भी_खून नहीं था?

✊ क्या उस ज़माने के #ब्राह्मण #शारीरिक_रूप से इतने अधिक #शक्तिशाली और #बलवान हुआ करते थे?

✊ क्या तुम्हारे हाथ पैरों में बेड़ियाँ डाली हुई थीं?

✊ अगर डाली तो किसने डाली थीं

वे बेड़ियाँ?

✊ क्या उन दिनों में #ब्राह्मणों_का_शासन हुआ करता था?
✊ जरा बताओगे कौन-2 से वो ब्राह्मण राजा थे?
✊ क्या नाम थे उनके?
✊ उनका कहाँ-कहाँ पर शासन था?
✊ उन दिनों में जो राजा थे तो उन्होने #ब्राह्मणों को इतनी खुली छूट क्यों दे रखी थे?
✊ क्या उन सब दिनों में ब्राह्मणों की

सख्या तुम लागा स कइ #गुणा आधक था?
☝ आखिर वे कौन-कौन से इतने #सशक्त कारण थे कि
☝ #ब्राह्मण सैंकड़ों वर्षों तक तुम पर #ज़ुल्म ढाते चले गए और
☝ तुम #चुपचाप उन सब ज़ुल्मों को सहते चले गए?

तो सुनो अब ऐसा ही होता आया है।
☝ जब भी किसी के साथ कुछ #घटित होता है और लोगों को उसके कारण

पता नहीं होता तो बोलते हैं #भगवान_की_इच्छा से हुआ।
☝ ठीक इसी प्रकार कुछ #कुंठित_जाहिलों को लगता है कि ☝ उनके साथ जो भी #बुरा हुआ है वो #ब्राह्मणों ने किया है ☝ क्योंकि #ब्राह्मणों को #पृथ्वी_का_देवता कहा जाता है।

☝ दूसरा कारण एक यही #विचारधारा है जो किसी की #जाहलियत का विरोध

नहीं करते,उन्हें कौन #समझाए #सनातन और $हिन्दुत्व आज बचा है तो उसके #रक्षक यही निरीह ब्राह्मण ही हैं।

अब सुनो तुम #नेहर_के_कुकर्म😠 #गाँधी_के_कुकर्म😠 के साथ #अंबेडकर_के_कुकर्म😠 की भी सच्चाई...
वो भी #प्रमाण के साथ...

☝ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक "#शूद्र_कौन_थे" के पेज नंबर 3 और 4

लिखा है कि
"शूद्रों ने ब्राह्मणों पर अत्याचार किया है।"
👇👇👇

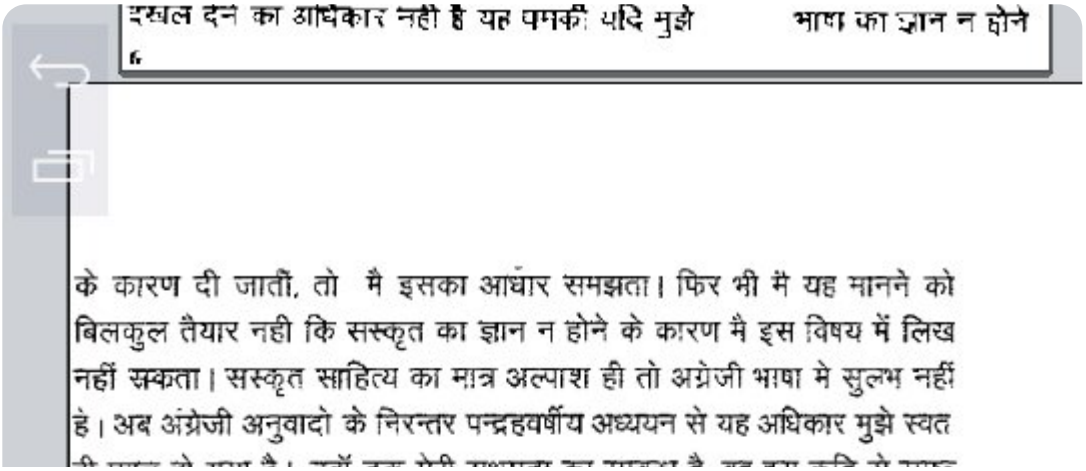
दखल देने का अधिकार नहीं है यह धमकी यदि मुझे भाषा का ज्ञान न होने
के कारण दी जातीं, तो मै इसका आधार समझता। फिर भी मैं यह मानने को
बिलकुल तैयार नही कि सस्कृत का ज्ञान न होने के कारण मै इस विषय में लिख
नहीं सकता। सस्कृत साहित्य का मात्र अल्पाश ही तो अग्रेजी भाषा मे सुलभ नहीं
है। अब अंग्रेजी अनुवादो के निरन्तर पन्द्रहवर्षीय अध्ययन से यह अधिकार मुझे स्वत

हो प्राप्त हो गया है। जहाँ तक मेरी सक्षमता का सम्बन्ध है, वह इस कृति से स्पष्ट हो जायेगी। मै "जहाँ फरिश्ते जाने से भय खाते है, मूर्ख वहाँ प्रवेश कर जाते हैं" आदर्श को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्जित क्षेत्र मे प्रवेश करने का साहस कर रहा हूँ।

मेरी अपनी गवेषणा के आधार पर प्रतिपादित मत–निष्कर्ष ही इस पुस्तक की विशेषताये है। इस कृति मे दो विशेष प्रश्न् उठाये गये है– (1) शूद्र कौन थे तथा (2) वे प्राचीन आर्यो के समाज का चौथा वर्ण क्यों और कैसे बने। संक्षेप मे मेरा उत्तर निम्न प्रकार है.

1 शूद्र आर्यो की जातियो मे सूर्यवशीय हैं।

2 एक समय था जब आर्यो मे केवल तीन ही वर्ण थे– ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।

3 शूद्रों का प्रथक वर्ण न था। व आर्यो के द्वितीय वर्ण– क्षत्रिय वर्ण– का ही एक अग थे।

4 शूद्र राजाओं और ब्राह्मणो मे निरन्तर सघर्ष चला और ब्राह्मणों को शूद्रो के वीभत्स अत्याचार सहने पडे।।

5 शूद्रो के दमन से आक्रान्त ब्राह्मणों ने घृणावश शूद्रो का उपनयन बन्द कर दिया।

6 उपनयन– विरोध से शूद्रो का सामाजिक पराभव हुआ। वे सामाजिक स्तर पर इतने पतित हुए कि उन्हें वैश्यों से भी नीचे एक और वर्ण– चौथा वर्ण बनना पडा।

इन निष्कर्षो पर मै विद्वानो की सम्मति की उपेक्षा करता हूँ। ये मत न केवल मौलिक है, प्रत्युत सभी प्रचलित सिद्धान्तो के विरोध में हैं। मेरा मत मान्य है अथवा नही, यह उन पर निर्भर करता है जो इस का निर्णय करने के अधिकारी हैं। यदि विद्वान किसी मत विशेष से सम्बन्धित हो तो निश्चय ही इस मत को अमान्य कर देगा। यदि समालोचक सच्चा है तो आशा है वह मेरे निष्कर्षो से सहमति प्रकट करेगा। कम से कम वह मेरे मत को नूतन दृष्टिकोण कहकर अवश्य सराहेगा।

विद्वानो के अतिरिक्त हिन्दू समाज पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, इसकी कल्पना भी रोचक ही होगी। आज का हिन्दू समाज पाँच श्रेणियो मे विभाजित है। पहला वर्ग पुरात पंथी लोगों का है जो हिन्दू सामाजिक प्रणाली में कोई दोष नहीं मानते दूसरा वर्ग आर्य समाजियों का है वे वेदों में विश्वास व्यक्त करते हैं और

#त्रिभुवन_सिंहजी चाचाजी की पुस्तक के कुछ अंश एवं उनका लेख✍✍✍

#शूद्र_का_अर्थ_नीच:डॉ आंबेडकर कैसे इस #भ्रामक निष्कर्ष पर पहुँचे।
#WhoWereTheShudras नामक अपनी परिकल्पनात्मक पुस्तक में "डॉ अम्बेडकर"जब #ब्राह्मणों के लिए #प्रीस्ट और #शूद्र के लिए #नीच(#Menial)शब्द का चयन करते हैं

PREFACE

In the present stage of the literature on the subject, a book on the Shudras cannot be regarded as a superfluity. Nor can it be said to deal with a trivial problem. The general proposition that the social organization of the Indo-Aryans was based on the theory of *Chaturvarnya* and that *Chaturvarnya* means division of society into four classes—*Brahmins* (priests), *Kshatriyas* (soldiers), *Vaishyas* (traders) and *Shudras* (menials) does not convey any idea of the real nature of the problem of the Shudras nor of its magnitude. *Chaturvarnya* would have been a very innocent principle if it meant no more than mere division of society into four classes. Unfortunately, more than this is involved in the theory of *Chaturvarnya*. Besides dividing society into four orders, the theory goes further and makes the principle of graded inequality the basis for determining the terms of associated life as between the four *Varnas*. Again, the system of graded inequality is not merely notional. It is legal and penal. Under the system of *Chaturvarnya*, the *Shudra* is not only placed at the bottom of the gradation but he is subjected to innumerable gnominies and disabilities so as to prevent him from ising above the condition fixed for him by law. Indeed ntil the fifth *Varna* of the Untouchables came into eing, the *Shudras* were in the eyes of the Hindus the west of the low. This shows the nature of what might called the problem of the *Shudras*. If people have no ea of the magnitude of the problem it is because they ve not cared to know what the *udras* is. Unfortun

(*Breaking India* : R. Mann... pp. 40-41)

भारत के हिन्दू समाज की बाइबिल के अनुसार मैपिंग करने पर एक वर्ग (वर्ण) ऐसा निकला, जिसके लिए हिन्दुओं के आध्यात्मिक ग्रंथों में 'सुश्रूषा' शब्द कर्तव्य रूप में लिखा गया था और वह था शूद्र। अब तक भारत में, हैम की संततियों लायक एक पूरी तरह से फिट समुदाय तैयार हो चुका था। वह समुदय था– श्रमशील, सर्विस सेक्टर और मैनुफैक्चरर, जिसके द्वारा निर्मित विशाल मैनुफैक्चरिंग के लूट लोभ में, एक हजार वर्ष से भारत इस्लामी और ईसाई आतताइयों का दंश सहते-सहते त्रस्त हो चुका था। सुश्रूषा का अंग्रेजी में अनुवाद किया तो जो शब्द मिला वह था 'सर्विस' (Service); और सर्विस से बाइबिल के सर्वीच्यूड (Servitude) का मिलान किया गया। फिर वर्ण का अर्थ निकाला गया—चमड़ी का रंग। अब मामला पूरी तरह फि

बैठ गया–आर्य अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सवर्ण हुए अर्थात् गोरे रंग के (Fair skinned) और शूद्र काले, असवर्ण, मूलनिवासी, हैम की शापित संततियाँ, जो वंश दर वंश सवर्णों की गुलामी करने को बाध्य थी। कहानी पूरी तरह फिट बैठ गयी। पूरा हिन्दू समाज बाइबिल के अनरूप अनुकूलित हो गया। अब गुलामी तो निम्न कार्य ही हुआ इसलिए सुश्रूषा शब्द संस्कृत के आध्यात्मिक ग्रंथ से निकलकर बाइबिल के पवित्र जल से बपतिस्मा करवाते हुए पहले सर्विस, फिर सर्वीच्यूड, फिर परियाह (Pariah) से होता हुआ 'निम्न' में परिवर्तित हो गया (सुश्रुषा-Service-Servitude-Pariah-Menial. इसीलिए डॉ. अम्बेडकर ने जब कर्तव्य के आधार पर ब्राह्मण (Priest) क्षत्रिय (Soldiers), वैश्य (Traders) को लिखा तो शूद्र के आगे स्वतः Menial (निम्न) जुड़ गया।

ये तो था मानसिक रूप से विकृत यूरोपीय दस्युओं के द्वारा रचा गया काल्पनिक साहित्य; जिसको बारम्बार लिखकर तत्कालीन मैकाले दीक्षित भारतीयों के मस्तिष्क को भरमाने का काम किया गया।

This Japanese poster shows British Prime Minister Winston Churchill about to chop off the fingers of an Indian textile worker in a textile factory (a historical fact). The text says: "To save Manchester, the British rulers shed the blood of Indians and in return gave them hunger and poverty".

इन्फोर्मेशन टेररिज्म : अछूत प्रथा का जन्म

भारत के 'कृषि–शिल्प–वाणिज्य' का विनाश करके ब्रिटिश दस्युओं ने करोड़ो भारतीयों को बेरोजगार करके उनको भुखमरी अकाल और संक्रामक महामारियों के हवाले कर दिया। यह काम **ब्राह्मणीय या मनुवाद** ने नहीं किया था, यूरोपीय दस्यु इसाई ही इसके लिए उत्तरदायी थे। अकेले 1918 में 'इन्फ्लुएंजा' नामक संक्रामक बीमारी से 125,000,000 (12.5 करोड़) लोग प्रभावित होते है जिनमें 12,500,000 (1 करोड़ 25 लाख) लोग मृत्यु के हवाले हो जाते हैं। इस चार्ट को देखिये, जिसमें 1800–1900 A.D. के बीच भारत की विनष्ट होती जी0डी0पी0 शेयर और अकालों तथा संक्रामक बीमारियों से मरने वाले भारतीयों का डेटा है। इन संक्रामक बीमारियों से बचने के लिए **'अछूत–प्रथा'** का जन्म हुआ, जिसको अपने अपराधों को छुपाकर फेक न्यूज आधारित लिटरेचर के द्वारा महाभारत और रामायण के पात्र एकलव्य और शम्बूक को जोड़कर इस प्रथा को 3000 वर्ष पुरानी प्रथा बतलाया गया।

चार्ट:–

वर्ष	भारत का विश्व जी0डी0पी0 में शेयर	वर्ष	अकालों की संख्या	मृतकों की संख्या
1750	24.7%	1750-1775	Nil	Nil
1800	19.7%	1775-1800	Nil	Nil
1830	17.6%	1800-1825	5	10 लाख
1860	8.6%	1825-1850	2	4 लाख
1880	2.8%	1850-1875	6	50 लाख
1900	1.7%	1875-1900	18	1.5 करोड़ से 2.5 करोड़

(आने वाली पुस्तक का पुस्तकांश)

Dr. Tribhuwan Singh

करते हैं,तो किसी का ध्यान इस #सच्चाई पर नही गया आज तक कि क्या तात्कालिक #हिन्दू_समाज को #बाइबिल के खांचे में रखकर #बांटा और #व्याख्यायित किया जा रहा है?

☝ क्या #प्रीस्ट किसी #भारतीय_ग्रंथ का अंग है?
☝ यह #बाइबिल का अंग है,#पादरी का अर्थ है #प्रीस्ट।
मैंने अपनी इस पुस्तक में इस

बात की #व्याख्या किया है कि किस तरह #बाइबिल के खांचे में #हिन्दू_समाज को रखकर #व्याख्या किया गया,
☝ जिसके कारण वे इस #निष्कर्ष पर पहुंचे कि #शूद्र का अर्थ है #नीच....

☝ भारत के #आर्थिक_इतिहास और दस्यु #ईसाइयों द्वारा भारत को #लूटने और भारत की #कृषि #वाणिज्य और #शिल्प के विनाश के

कारण करोड़ो लोग #बेरोजगार हुए और #भुखमरी और #मौत_के_शिकार हुए।

☝ इस तथ्य को समझे बिना आप इस #दुर्व्याख्या को समझ नही पाएंगे

थोड़ा बाइबिल का भी ज्ञान आपको होना चाहिये कि किस तरह पूरी #दुनिया_पर_कब्जा करने के उपरांत उन्होंने पूरे वैश्विक मानवता को #बाइबिल के अनुसार बांटने की कोशिश

किया था...

☝ आपको यह भी #समझना होगा कि #रंगभेद_नीति का आधार क्या था?

☝ किसी का रंग काला होने के कारण क्या ❓ वह घृणा का पात्र हो सकता है?

☝ किन किन देशों में चलती थी रंगभेद नीति? और क्यों चलती थी?

☝ हर कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है।

कार्य कारण सिद्धांत को समझे बिना आप इन

निष्कर्षो को समझ नही पाएंगे।

☝ इसी #फेक_न्यूज़ और हेट लिटरेचर को विश्व आज भी भारत और हिंदुत्व के विरुद्ध हथियार बनाकर रखा हुआ है। वह चाहे @BBC हो या कोई वामी या वैश्विक इंडोलॉजिस्ट।

यह उस #दस्तावेज के कुछ पन्ने है - #रेगुलशन #सन1804 या #सन1806, जिसका उद्धरण प्रस्तुत करके अंबडेकर ने #सन1930 में अपने मालिकान अंग्रेजो को बताया कि #पुरी_के_मंदिर में 17 जातियों को नही घुसने दिया जाता था।

(☝ जैसा कि मैंने आप सभी को अपने पिछले थ्रेड में संझेप में बताया था ☝)

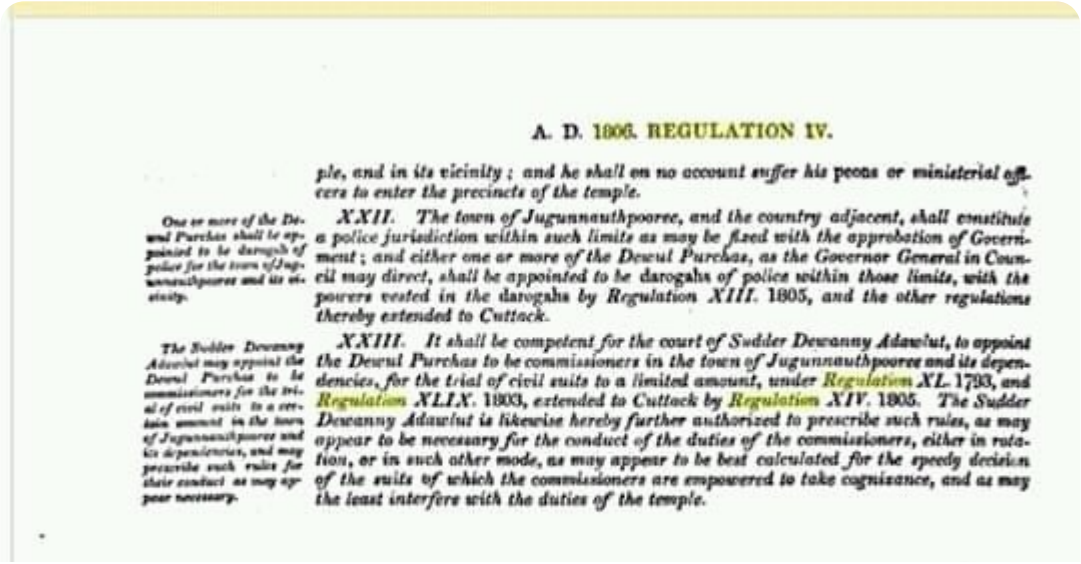

A. D. 1806. REGULATION IV.

ple, and in its vicinity; and he shall on no account suffer his peons or ministerial officers to enter the precincts of the temple.

One or more of the Dewul Purchas shall be appointed to be darogah of police for the town of Jugunnauthpooree and its vicinity.

XXII. The town of Jugunnauthpooree, and the country adjacent, shall constitute a police jurisdiction within such limits as may be fixed with the approbation of Government; and either one or more of the Dewul Purchas, as the Governor General in Council may direct, shall be appointed to be darogahs of police within those limits, with the powers vested in the darogahs by Regulation XIII. 1805, and the other regulations thereby extended to Cuttack.

The Sudder Dewanny Adawlut may appoint the Dewul Purchas to be commissioners for the trial of civil suits to a certain amount in the town of Jugunnauthpooree and its dependencies, and may prescribe such rules for their conduct as may appear necessary.

XXIII. It shall be competent for the court of Sudder Dewanny Adawlut, to appoint the Dewul Purchas to be commissioners in the town of Jugunnauthpooree and its dependencies, for the trial of civil suits to a limited amount, under Regulation XL. 1793, and Regulation XLIX. 1803, extended to Cuttack by Regulation XIV. 1805. The Sudder Dewanny Adawlut is likewise hereby further authorized to prescribe such rules, as may appear to be necessary for the conduct of the duties of the commissioners, either in rotation, or in such other mode, as may appear to be best calculated for the speedy decision of the suits of which the commissioners are empowered to take cognizance, and as may the least interfere with the duties of the temple.

committed to them with propriety. Nothing however contained in this, or in the foregoing section, shall be construed to preclude the Governor General in Council from nominating in the first instance any person to fill the office of pundit, *should he at any time deem it advisable to exercise that power.*

The foregoing rules shall not preclude the Governor General in Council from nominating in the first instance any person to fill the office of pundit.

XIV. In all cases of difference of opinion amongst the members, the opinion of the majority shall be adopted by the assembly.

The opinion of the majority of the assembly shall be adopted.

XV. The pundits *shall hold their situations so long as they shall continue to conduct themselves with integrity, diligence, and propriety; but nothing contained in this regulation shall be construed to preclude the Governor General in Council from removing any person from that situation, on proof of misconduct in such person made to the satisfaction of Government.*

The pundits shall hold their situations during good behaviour, but may be removed on proof of misconduct.

XVI. To enable the assembly of pundits *to perform the duties of their station with greater effect, they are hereby empowered to punish persons subject to their control, for any instance of neglect or misconduct, by imposing small fines upon them not exceeding one month's salary or income, or by suspending the offender from his office, if the offence shall appear to merit that punishment; provided however that, in the former case, the fines so imposed shall be reported to the collector, in order that the amount may be deducted from the offender's salary or wages, and that in the latter case, viz. the suspension of any officer from his employment, a report shall be made to the collector for the decision of the Board of Revenue, or of the Governor General in Council, according to the nature and the circumstances of the case, on the principle of the rules contained in Regulation V.* 1804.

The assembly of pundits are authorised to punish persons subject to their control for neglect or misconduct, by fine or suspension, under certain restrictions and rules.

XVII. If any person attached to the temple of Jugunnauth shall be guilty of any offence of a criminal nature, which may appear to the assembly of pundits *to require any greater punishment than that above stated, the person accused shall be delivered over to the charge of the officers of police, who will proceed against him in the manner prescribed in the general regulations.*

Rule in cases of criminal offences of a nature requiring greater punishment than that stated in the foregoing section.

XVIII. Such salaries shall be allowed out of the funds to be assigned for the support of the temple, to the persons composing the assembly of pundits *at* Jugunnauth, *and to the other ministers and officers of the temple, as the Governor General in Council may hereafter think proper to fix for their support.*

Salaries will be hereafter allowed out of the funds assigned for the support of the temple to the several persons attached to it.

XIX. It shall be the duty of the collector to report to the Board of Revenue whenever vacancies may occur among the ministers and officers of the temple; when that Board will either order the vacancies to be filled, or refer the case to Government, as may appear to be proper, in conformity to the principle of the rules contained in Regulation V. 1804. *In the recommendation of persons to fill such vacancies, the collector is required to attend particularly to the established usages of the temple, and to the religious opinions of the officers of the temple, and of the pilgrims who resort to it.*

Rule to be observed in cases of vacancy occurring among the ministers and officers of the temple.

XX. To enable the collector of the tax on pilgrims at Jugunnauth, to perform the duty entrusted to him with effect, he is hereby empowered to levy small fines from any of the ministers, officers, or servants, attached to the temple, for neglect of duty, or other misconduct. Provided, however, that no fine shall be levied, exceeding the actual or computed monthly allowance of the person by whom it may be payable. Provided also, that any person, on whom such punishment may be imposed, shall be at liberty, should he deem himself aggrieved, to apply for redress to the Board of Revenue; who will pass such orders on the subject as shall appear to be just and reasonable, and whose decision shall be final.

The collector authorised to levy fines from the ministers, officers, &c. in certain cases.

Any person so punished may apply to the Board of Revenue for redress, should he think himself aggrieved.

XXI. The collector of the tax on pilgrims at Jugunnauth shall be ex officio assistant of the magistrate of the zillah of Cuttack, and shall be competent to exercise all the powers, which either are, or at any time may be, vested in the head assistants to the zillah and city magistrates. The person by whom these powers may be exercised, is required at all times, to give every attention to the religious opinions of the Hindoos, and to the particular institutions of the temple of Jugunnauth, which may be consistent with the general regulations, and with the maintenance of peace and good order at the tem-

The collector shall be ex officio assistant to the magistrate of the zillah of Cuttack, and may exercise all the powers vested in the head assistants to the zillah or city magistrates, under certain restrictions.

Digitized by Google

ed usage, a fee from the pilgrims, according to a table of rates which shall be kept fixed at the temple of Jugunnauth, and in places adjacent to the temple, for general information. The officers attached to the temple, are accordingly strictly prohibited from making any demands for money, exclusive of the tax and fees specified in this and the preceding sections. This restriction, however, shall not be construed to preclude the said officers from receiving presents or gifts; the same being voluntarily made. Any deviation from these rules will subject the officer, by whom such offence shall be committed, on proof thereof made to the satisfaction of the Board of Revenue, or of the Governor General in Council, (if the nature of the case shall require a reference to Government under the general provisions contained in Regulation V. 1804,) *to be dismissed from his employment.*

a table of rates to be fixed up for general information.

Voluntary presents or gifts may be received by the officers.

Deviations from these rules will subject the officer to be dismissed from his employment.

VII. It shall be the duty of the collector of the tax on pilgrims to establish, with the approbation of the Board of Revenue, such rules, as may be necessary for the due collec-

The collector, with the approbation of the Board of Revenue, shall establish

such rules as may be necessary for the due collection of the tax, &c.

tion of the tax; for keeping regular and clear accounts of the receipts; for the prevention of embezzlement by the native officers; and for guarding against any evasion of the established tax by the pilgrims.

He shall likewise, with the assistance of the police officers, establish the necessary rules for preserving regularity and good order amongst the persons resorting to the temple.

VIII. It shall likewise be the duty of the collector to establish, with the sanction of the Board of Revenue, and aided by the officers of police, such rules for the admission of pilgrims into the town of Jugunnauthpooree through the prescribed avenues of ghaut Attarah Nullah and ghaut Lokenauth, as may be necessary to guard against accidents and confusion, and to preserve regularity and good order among the great concourse of people resorting to the temple.

What persons shall be exempted from the tax.

IX. In conformity to long and established usage, the following descriptions of persons shall be considered to be exempt from the payment of the tax on pilgrims at Jugunnauth, viz. byragheen; persons employed in carrying the water of the Ganges to the temple of Jugunnauth, or to any other Hindoo temple; persons residing between the Byturnee Nullah and the Ganjam river; persons resorting to the town of Jugunnauthpooree for trade, or for any other purpose, excepting on pilgrimage. Pilgrims likewise in an actual state of poverty shall be exempted from the payment of the established tax, on declaring, under such form or ceremony as shall be prescribed by the native officers entrusted with the management of the temple, that they cannot contribute the prescribed tax of two rupees, and that they have not in their immediate possession more money than is absolutely necessary to defray their expenses on their return from the pilgrimage.

Any other class of people heretofore exempted, may be exempted by the Governor General in Council, who reserves to himself the power of granting temporary and special exemptions.

X. If it should appear that any other class of people was heretofore exempted from the payment of the duty levied on pilgrims under the late Marhatta Government, the collector of the tax shall report the circumstance to the Board of Revenue. That Board shall submit the case, with their sentiments on the subject, to the Governor General in Council, who will order such class of people to be in future exempted from the payment of the tax, or not, as may appear to him to be proper. The Governor General in Council likewise reserves to himself the power of granting any temporary and special exemptions from the tax in favor of individuals which he may consider to be proper.

The superintendence of the temple and its interior economy, and the control over the officers and servants attached to it, shall be vested in an assembly of pundits or learned Brahmins.

XI. The superintendence of the temple of Jugunnauth and its interior economy; the conduct and management of its affairs; and the entire control over the priests, officers, and servants, attached to the idol and to the temple, shall be vested in an assembly of pundits or learned Brahmins, who on all occasions shall be guided by the recorded rules and institutions of the temple, or by long and established usage.

The assembly of pundits shall consist of three members, to be recommended by the collector of the tax on pilgrims, through the Board of Revenue, to the Governor General in Council.

XII. The assembly of pundits shall consist of three members, to be recommended by the collector of the tax on pilgrims, through the Board of Revenue, to the Governor General in Council.

Rules to be observed by the collector in making the selection.

XIII. In the selection of persons to fill that situation, it shall be the particular duty of the collector to consult the opinions of the most respectable Hindoos, with respect to the description of persons, from whom the selection ought to be made, and to satisfy himself that the character and qualifications of the persons whom he may recommend, are such as afford reasonable grounds of belief, that they will exercise the important trust to be

Digitized by Google

A. D. 1806. REGULATION IV*.

A REGULATION *for levying a Tax from Pilgrims resorting to the Temple of Jugunnauth, and for the Superintendence and Management of the Temple.*—PASSED *by the Governor General in Council, on the 3d April 1806; corresponding with the 22d Chyte 1212 Bengal era; the 30th Chyte 1213 Fussily; the 22d Chyte 1213 Willaity; the 15th Chyte 1863 Sumbut; and the 13th Mohurrum 1221 Higeree.*

Preamble.

WHEREAS *it is provided by Section 31, Regulation XII. 1805, that a tax shall be levied from pilgrims resorting to the temple of Jugunnauth: And whereas it is essentially necessary that provision should be made for the protection of the pilgrims from undue exactions on the part of the officers of Government or of the temple, and also for the preservation of order, tranquillity, and regularity in the town of Jugunnauthpooree, and its dependencies, and for the trial of civil suits of inconsiderable amount or value within those limits; the following rules have been passed, to be in force from the time of their promulgation.*

A tax shall be levied on pilgrims resorting to the temple of Jugunnauth, to be collected by a covenanted servant of the Company under the control of the Board of Revenue.

II. A tax shall be levied on the part of Government (as was heretofore done under the late Marhatta government) on pilgrims resorting to the temple of Jugunnauth. The collection of the tax shall be entrusted to an officer, (being a covenanted servant of the Company,) with the official designation of the collector of the tax on pilgrims at Jugunnauth. The general superintendence of the collections, and the control of the officers employed in the performance of that duty, shall be vested in the Board of Revenue at Fort William.

The avenues for the admission of pilgrims to the temple confined to the ghaut Attarah Nullah and ghaut Lokenauth.

III. The avenues for the admission of pilgrims to the temple of Jugunnauth shall be confined to two: viz. ghaut Attarah Nullah on the North, and ghaut Lokenauth on the South of the town of Jugunnauthpooree.

Rate of tax to be levied at each of those ghauts respectively on pilgrims of the description of laal jautreys.

IV. The tax to be levied at ghaut Attarah Nullah, shall be fixed at ten rupees; and the tax to be levied at Ghaut Lokenauth, shall be fixed at six rupees, on each person of the class of pilgrims, commonly called laal jautreys; *whether such appellation shall have been assumed by the pilgrims themselves, or whether they shall be so denominated by their conductors.*

Rate of tax on other pilgrims.

V. The tax on all other pilgrims indiscriminately shall be levied at the rate of two rupees from each person.

The abovementioned tax shall include the usual fees of the officers of the temple, with exception of those denominated purhaees and pundahs, who shall be entitled to receive the usual fees according to

VI. The abovementioned rates of tax on pilgrims, are to be considered to include the usual fees of the officers of the temple; and these fees shall in future be paid to them out of the funds which have been, or may be assigned for the support of the temple. Provided, however, that this rule shall not be considered applicable to the officers denominated purhaees *and* pundahs, *who shall be entitled to receive, in conformity to establish-*

* The whole of this regulation is rescinded by Preamble to Regulation IV. 1809.

☝ लेकिन यह नही बताया कि कौन नहीं घुसने दे रहा था और क्यों नही घुसने दे रहा था।
☝ अब आप लोथियन समिति की रिपोर्ट पढिये।
☝ इस रेगुलशन को बनाया गया था हिन्दुओ से #पुरी_मन्दिर_में_दर्शन करने के लिए, #टैक्स वसूलने के लिए।
☝ जो जितना टैक्स देने की #आर्थिक_क्षमता रखता था उसको उस श्रेणी

की सुविधा लेने की अनुमति देते थे।
☝ 2 रुपये से लेकर 10 रुपये टैक्स वसूली होती थी ☝
☝ जो #टैक्स नही दे सकता था,उसे #घुसने नही देते थे वे। ☝ पुजारी,ब्राह्मण नहीं,
☝ #अंग्रेज दस्यु,जिनको #दलित #छींटक अपना बाप समझते हैं।
☝ यह रेगुलशन #Temple_Endowment_Act नामक उस #कानून_की_पृष्ठभूमि

बनाती है जिसे #अंग्रेजों😠 ने बनाया था और #स्वतंत्रता के बाद #नेहरू😠 ने उसे जारी रखा और आज भी वह जारी है #मंदिर_की_सम्पत्तिओं और उस पर चढ़ावे पर #सरकारी_कब्जा

☝ लेकिन #मस्जिद और #चर्च के लिए ऐसा कोई #कानून
न उन्होंने बनाया,न इन्होंने बनाया
☝ आज भी मंदिरों पर सरकार का कब्जा है।

☝ क्यों है?
☝ क्योंकि आपने कभी सवाल नही उठाया...
☝ सवाल उठाइये।
☝ क्योंकि #सरकार_का_चरित्र यानी #System😠 एक ही जैसा होता है।
☝ सरकार चलाते हैं बाबू।
☝ नेता जब तक उनको बम्बू न करे वह कोई #कानून बदलने नहीं देंगे।
☝ इस पोस्ट से एक और #महत्वपूर्ण प्रश्न उठाना चाहता हूँ।

☝ "कोई बता सकता है कि 10 रुपये का जो मूल्य #सन1804 में था,उसका आज कितना मूल्य होगा?

☝ #सन1807 में #FrancisHamiltonBuchnan लिखता है कि "एक रुपये" का मूल्य "दो पाण्ड"था।

☝ #सन1901 में #दादा_भाई_नौरोजी लिखते है कि #एक_रुपये_का_मूल्य #सोने_के_एक_सिक्के के बराबर था।

👇👇👇

☝ उस समय #दर्शनार्थियों से "2 रुपये" से लेकर"10 रुपए" के बीच #टैक्स वसूला जाता था।

#सन1804 जनवरी से अप्रैल के बीच "46,000दर्शनार्थी" गए थे जिनमें से लगभग 20,000 लोगों से #टैक्स वसूला गया था।
☝ यह दर्शनार्थी कोई राजा महाराजा नहीं थे,हर कुम्भ में आने वाले दर्शनार्थियों जैसे ही थे।

☝ लेकिन #सन1800 तक भारत विश्व की 20% जीडीपी का निर्माता था। ☝

☝ सन1900 आते-2 मात्र 2% जीडीपी का निर्माता बचा। ☝

☝ लाखो अछूत #सन1900 के आस पास पैदा हुए।"
इस पोस्ट के अनेक विंदु हैं।
आप जिन पर भी प्रकाश डाल सकते हैं, डालिये।
यह #PapersRelatedToEastIndiaAffairs से उद्धरित हैं...

(यह डॉक्यूमेंट गूगल अरचाइब पर आज भी उपलब्ध है।
कोई भी डाउनलोड करके पढ़ सकता है।)

"चाचाजी #त्रिभुवन_सिंहजी की ये पुस्तक अम्बेडकर की #WhoWereTheShudra का हिंदी ट्रांसलेट है...
इस पुस्तक के बहुत से अंश चाचाजी ने अपनी #Facebook पर पोस्ट किए हैं..
पढ़िये👇 👇

facebook.com/10005077098869...

#काँग्रेस_के_कुकर्म
☝️ हमारे हिन्दू समाज के बीच जातिवाद😠 का बीच बोया तो अँग्रेजों ने😠😠😠
☝️ लेकिन सिर्फ अपने #निजीस्वार्थ😠 के लिए,अपने वोटबैंक के लिए इस्तेमाल किया #काँग्रेस😠 के पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे टट्टुओं ने😠😠😠

ReadFullThread👇👇👇
twitter.com/badal_saraswat...

Badal Saraswat @badal_saraswat
Nov 05 20 · View on Twitter

#एक_सवाल_है_मेरा अपने उन भाईयों और बहनों से जो हमसे अलग हो गए हैं अगर किसी ने आप सभी को #शोषण के नाम पर

भड़काया और आप भड़क गए!
एक बार भी अपने भाईयों के बारे में नहीं सोचा...क्यों?
कुछ #तुच्छ_नीच_मानसिकता_राजनीति😠 करने वालों ने हम सभी को जाति के आधार पर बाँट दिया😠😠😠
👇👇👇

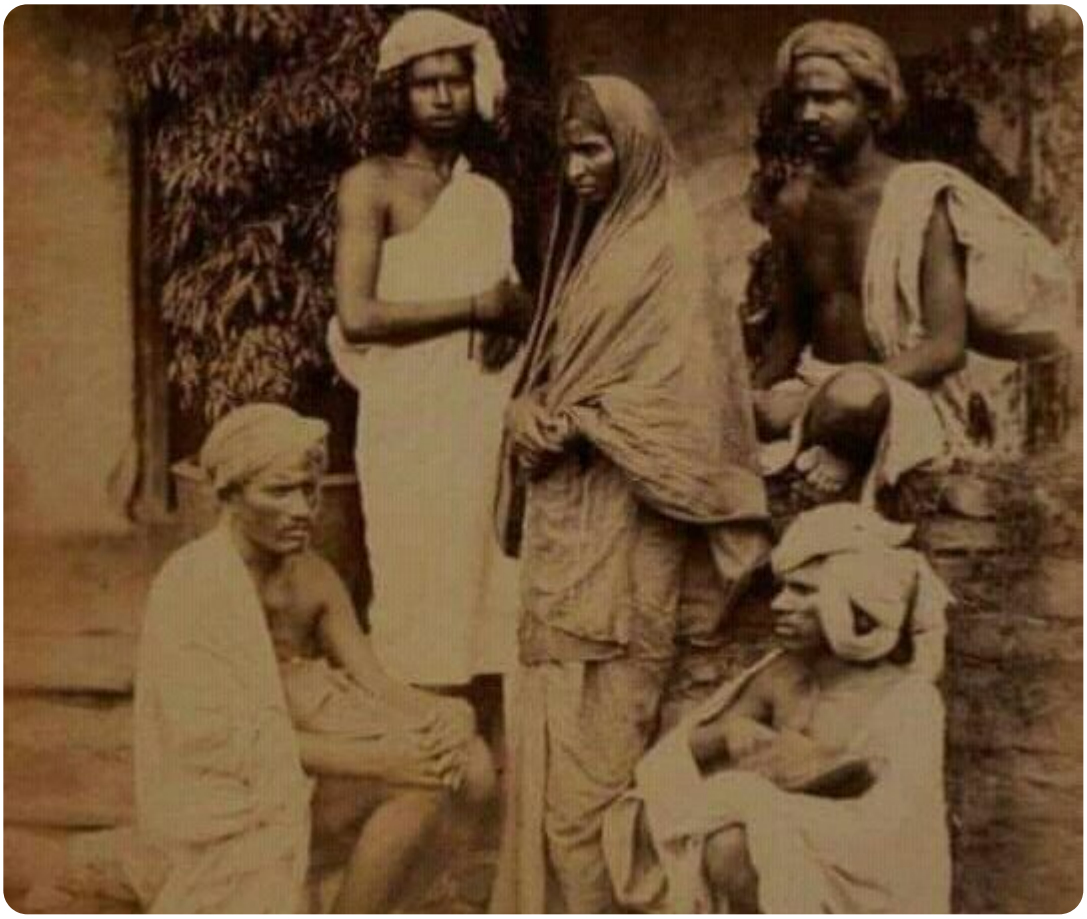

Show this thread

#काँग्रेस_के_कुकर्म
☝ अब सवाल यह है कि #काँग्रेस😠ने तो वही किया, जिसके लिए उसे बनाया गया था😠😠
☝ जो उसे करना था,वही शुरुआत से लेकर अंत तक करती आई,
☝ लेकिन हम सभी ने आजतक क्या ❓ किया,हिन्दू समाज को एकजुट करने के लिए???
हमारा कर्तव्य क्या है???

Read 👇👇👇
twitter.com/badal_saraswat...

Badal Saraswat @badal_saraswat

Dec 01 20 · View on Twitter

सोची समझी #साजिश😠 और ये तो हो ही नहीं सकता कि इसमें #नेहरू_के_कुकर्म😠और #काँग्रेस_के_कुकर्म😠 शामिल ना हों,हां एक इंसान और है जिसका नाम में लिखना नहीं चाहता लेकिन आप शुरुआत में ही समझ जरूर जाएंगे।

जैसा कि आप सभी जानते हैं #26जनवरी1950 को #संविधान लागू हुआ था।
पूरा प

Show this thread

#काँग्रेस_के_कुकर्म Vs #इतिहास_ही_हमारी_धरोहर_है
☝️ अगर हम जातिवाद😠के बात करें तो,इसका वैदिक काल में प्रमाण कहीं भी नहीं मिलता है❌
ये सब तुच्छ नीच मानसिकता वाली राजनीति करने वाले नेतागणों ने आज तक जारी रखा है,जिसका लाभ #समाज_के_ठेकेदार उठाते हैं😠

जाती है😟

👇👇👇
twitter.com/badal_saraswat…

Badal Saraswat @badal_saraswat
Jan 23 21 · View on Twitter

#इतिहास_ही_हमारी_धरोहर_है

#जातिवाद सभ्य समाज के माथे पर एक #कलंक है।
☝ जिसके कारण मानव,मानव के प्रति न केवल #असंवेदनशील बन गया है, ☝ अपितु शत्रु समान #व्यवहार करने लग गया है...
☝ समस्त मानव जाति #ईश्वर_की_संतान है।
☝ यह तथ्य जानने के बाद भी #छुआछूत के नाम पर

पूरा पढ़िये👇👇👇

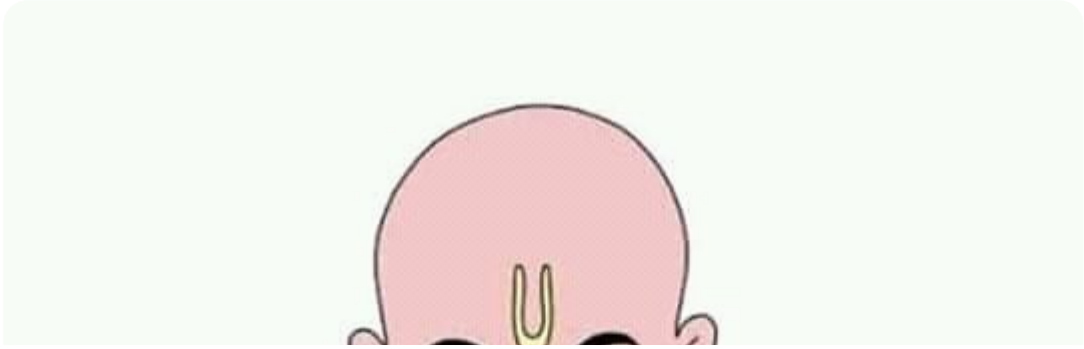

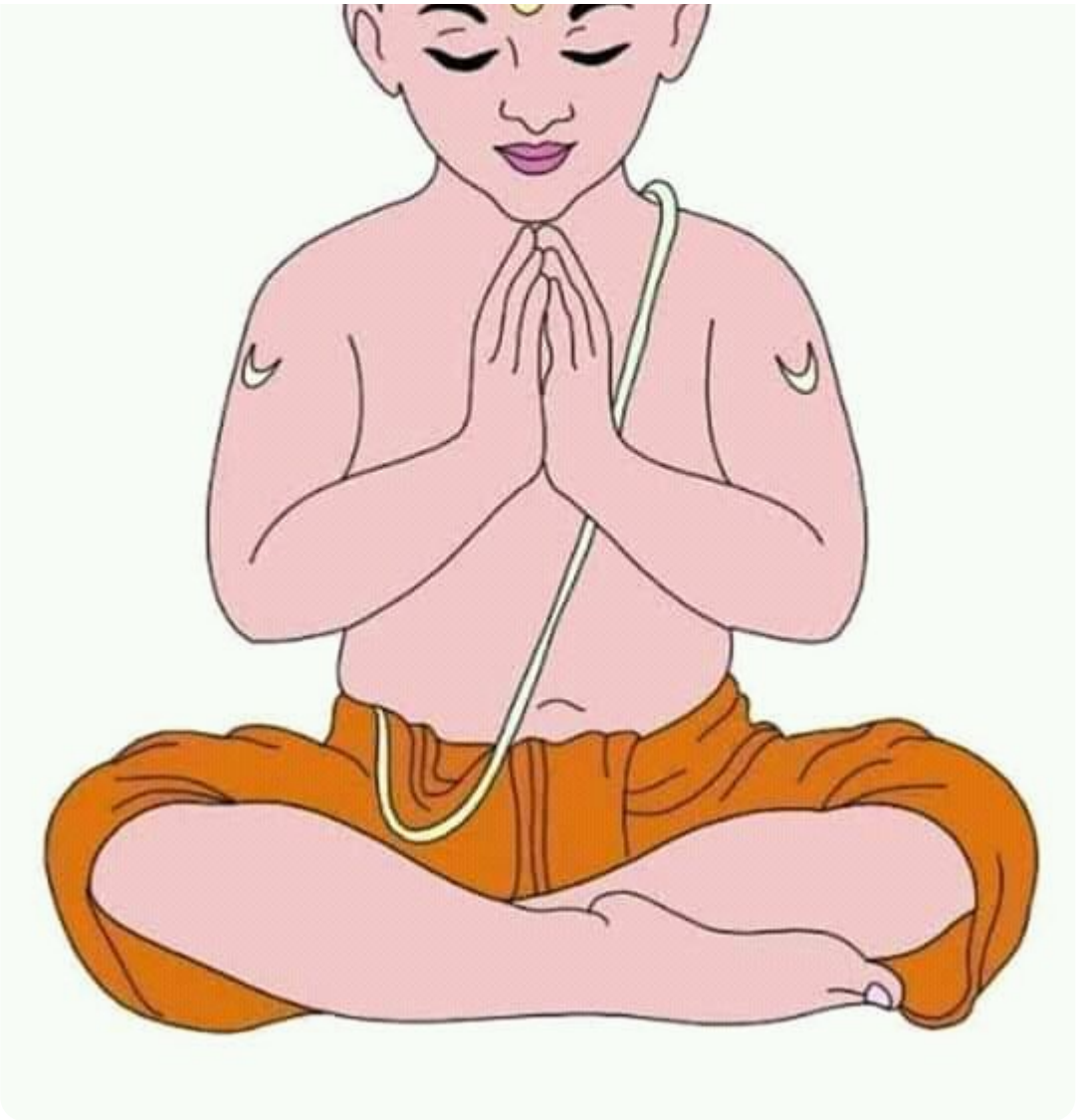

Show this thread

#काँग्रेस_के_कुकर्म Vs #हिन्दू
☝️ हम हिन्दू आज सभी वर्णों में #समाज_के_ठेकेदार बन गए हैं(कुछ को छोड़कर सब अपने👉वर्चस्व👈की लड़ाई लड़ रहे हैं)
☝️ हम हिन्दुओं की बहुत सी छोटी-2 गलतियों ने आज तक अपना कितना नुकसान किया है😢
ये खत्म करना है

ReadFullThread👇👇👇
twitter.com/badal_saraswat...

Badal Saraswat @badal_saraswat
Jan 29 21 · View on Twitter

#धर्मो_रक्षति_रक्षितः

☝️ लेकिन कैसे ❓ #हिन्दुओं कैसे ❓

☝️ क्या #योगदान है तुम्हारा #हिन्दूओं को एक करने का

☝️ #27फरवरी1915 मे एक दल बना #हिन्दू_महासभा इनका नारा-"#हिन्दुओ एक हो जाओ"

☝️ लेकिन #सन1915 से #सन2014 तक 99साल में इनसे #हिन्दू एक नहीं हुये...

☝️ उसके बाद

पूरा पढ़िये👇👇👇

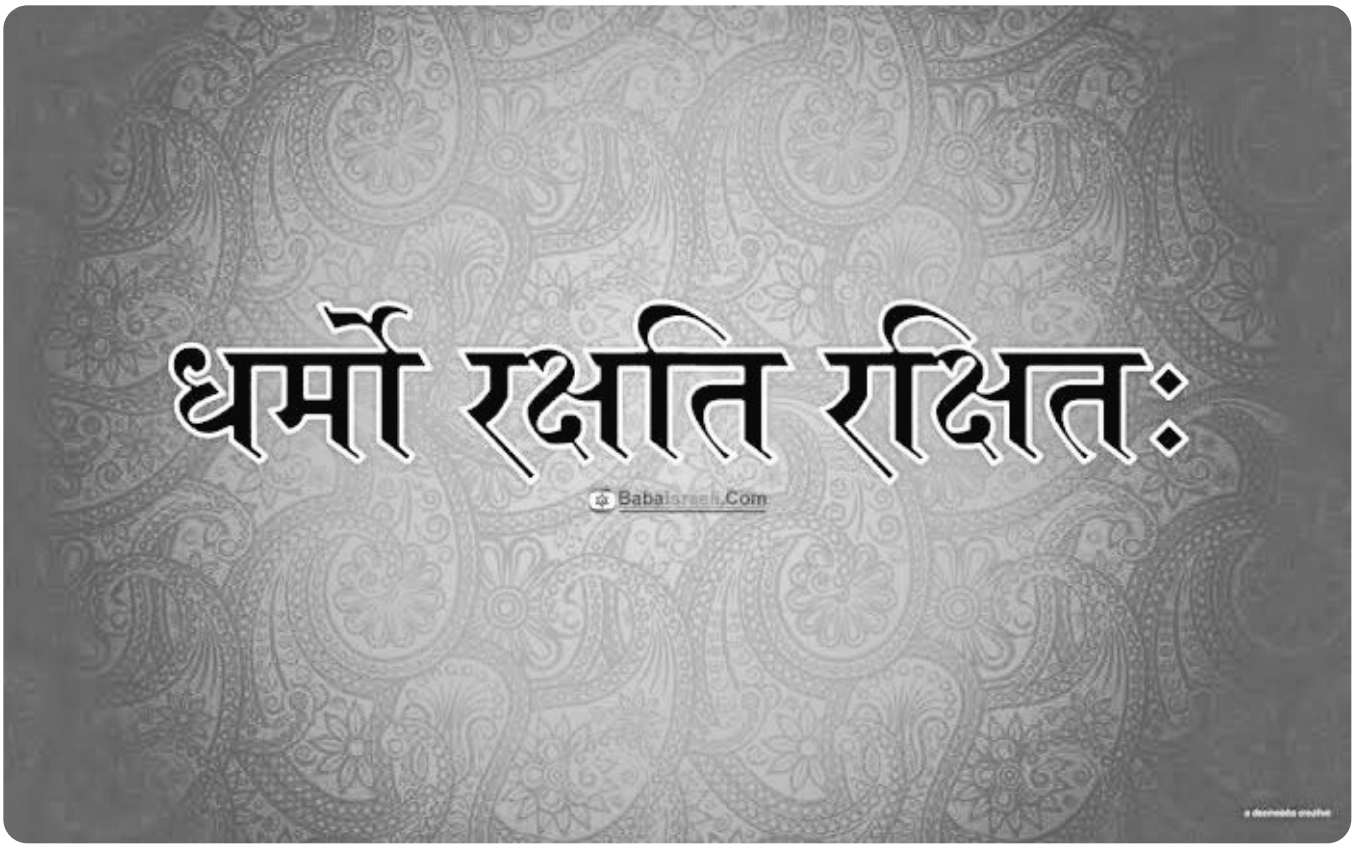

Show this thread

Badal Saraswat

Badal Saraswat

@badal_saraswat

झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं बाज़ की उडान में आवाज़ नहीं होती तजुर्बों ने सिखाया है शेरो को शिकार करना यूं बेवजह दहाड़ मारकर शिकार किया नहीं जाता..

Follow on Twitter